Name of the Scholar : Rashmi Rawat

Name of the Supervisor : Prof. Durga Prasad Gupt

Name of the Department : Hindi

Title : Hindi ki Stree- Aatmkathaon mein Aatm-Anveshan Ka Adhyayan

आत्म-चेतना के विकास के साथ ही आत्मकथा लेखन का प्रारंभ होता है। वैयक्तिकता की अवधारणा के समाज में पुष्ट होने के कारण लोगों की व्यक्ति मन को जानने-समझने में रुचि उत्पन्न हुई है। वर्तमान समय में आत्मकथा विधा अत्यंत लोकप्रिय विधा है। आत्मकथा की आधारशिला आत्मकथाकार का मानस है। ज्ञान की खोज-यात्रा का प्रस्थान बिंदु है 'आत्म'।

वर्तमान दौर में जब अस्मिता-विमर्श साहित्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। स्मृति और मिथक के माध्यम से सामुदायिक चेतना इन विमर्शों में आकार ले रही है। आत्मकथनों के माध्यम से रचना के उत्स तक पहुँचने की जिज्ञासा स्त्रियों के संबंध में और भी अधिक थी। निरंतरता के साथ व्यापक स्तर पर स्त्रियों का लेखन अपेक्षाकृत नयी परिघटना है भारत में सन 1990 के आसपास नारीवाद के आगमन के साथ ही हिंदी में स्त्री-आत्मकथाएँ निरंतरता के साथ आनी शुरू हुई हैं।

प्रथम अध्याय- '**विधा का व्याकरण**' में आत्मकथा के मुख्य तत्व और उसके स्थापत्य का वर्णन और विश्लेषण करके हिंदी में आत्मकथा की परंपरा का संक्षिप्त विवरण दे कर अपने मुख्य विषय स्त्री-आत्मकथाओं पर अपना ध्यान केंद्रित किया। **दूसरे अध्याय** '**पाठ के महत्व**' के अंतर्गत उत्तर-आधुनिक विचार और आलोचना की दृष्टि से आत्मकथा के पाठ के विभिन्न तरीकों को समझने का प्रयास किया गया है। **तीसरा अध्याय** '**आत्म का विकास**' है। स्त्रीत्व के गढंत (कंस्ट्रक्ट) की एक मूलभूत समस्या स्त्री के आत्म की संरचना और उसके विकास को उचित परिप्रेक्ष्य में समझने की है। यह स्त्री का आत्म ही जिसे सबसे अधिक कुचला गया है। **चौथे अध्याय** '**स्मृति, इतिहास और उद्घाटन**' में स्मृति की जटिल संरचना को स्पष्ट करते हुए दिखाया गया है कि आत्मकथा में स्मृति की क्या भूमिका होती है और आत्मकथाएँ, जो कि स्मृति की भित्ति पर ही स्वरूप लेती हैं, उनमें स्मृति की राजनीति द्वारा कैसे तथ्य अपना रूप बदल लेते हैं। **पाँचवें अध्याय** '**संवेदना और सरोकार के बिंदु**' में स्त्री की संवेदना की मनोभूमि तथा उसके निजी और सामाजिक सरोकारों का अन्वेषण किया

सरोकारों का अन्वेषण किया गया है। **छठे अध्याय 'स्त्री प्रश्नों के प्रति दृष्टिकोण'** में नारीवाद और स्त्री प्रश्नों के प्रति दृष्टिकोण के विकास की पहचान की गई है। सभी स्त्री आत्मकथाओं के प्रति एक सपाट दृष्टिकोण अपनाना न्यायसंगत नहीं है। निस्संदेह सभी स्त्री आत्मकथाओं में स्त्री प्रश्नों के प्रति सचेतनता मिलती है। **सातवाँ अध्याय 'जीवन-दृष्टि और भविष्य की खोज'** है। साहित्य की किसी भी विधा के साथ जीवनदृष्टि का प्रश्न अनिवार्य रूप से जुड़ा होता है। स्त्री आत्मकथाओं के पाठ और विश्लेषण का एक महत्वपूर्ण परिप्रेक्ष्य यह है कि स्त्री आत्मकथाओं से छन कर मूर्त होने वाली जीवन-दृष्टि को चीन्हा जाए। संवेदना और सरोकार का आत्मीय रिश्ता जीवन-दृष्टि के स्वरूप से ही है। उपसंहार में अपने अध्ययन-विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्षों को सार रूप में दे दिया गया है। निष्कर्ष शोध और अध्ययन की नई दिशाओं की ओर संकेत करते हैं।

हिंदी में लगभग सभी आत्मकथाएँ मध्यवर्गीय या उच्च वर्गीय स्त्रियों द्वारा लिखी गई हैं, जो हिंदी प्रदेश की सामाजिक-सांस्कृतिक विशेषता है। अतः इनके माध्यम से मध्य-उच्च वर्ग की स्त्री के सरोकार और परिप्रेक्ष्य ही समझे जा सकते हैं। विश्लेषण करने पर यह बोध होता है कि वर्तमान समय में स्त्री-सरोकार खास वर्गीय ढाँचे में कैद एक अकादमिक विमर्श बनता जा रहा है। भूमंडलीकरण, उदारीकरण के साथ बदले हुए रूप में वर्चस्वकारी शक्तियाँ सक्रिय हैं, अधीनस्थता के इन महीन ताने-बाने को समझ कर और व्यापक स्त्री सरोकारों तथा जन-आंदोलनों से जुड़ कर ही स्त्री-विमर्श ऊर्जा प्राप्त कर सकता है। भारत में स्त्री राजनीति का जो विकट अभाव है और उत्तर भारत के स्त्री-विमर्श में आम स्त्री अनुपस्थित है, इस परिदृश्य का प्रभाव इन स्त्री-आत्मकथाओं में भी देखा जा सकता है।

स्त्री आत्मकथाएँ मूलतः स्त्री समुदाय की संरचना के मूर्त रूप हैं । स्त्री-आत्मकथाएँ स्त्री-अस्मिता को दृढ़ करने का माध्यम हैं। अलग-अलग समुदायों, वर्गों, राष्ट्रों, धर्मों और भिन्न बहुधा स्त्री की नीर-क्षीर विवेक दृष्टि उसके विभिन्न औघड़ अनुभवों की बाढ़ में डूब जाती है। जीवन के संध्या काल में जब स्त्री को अवकाश मिला तो उसने इन तमाम वर्षों में अर्जित वैचारिकता के परिप्रेक्ष्य में अपने अतीत के अनुभवों को देखना-परखना शुरू किया। समय के पृष्ठ पर यदि अपने जीवन को फिर से लिखने का उसे अवसर मिले तो वह किस तरह लिखेगी, जिंदगी का यह इच्छित इतिवृत्त कैसा होगा, इसे जानने की दृष्टि से भी स्त्री-आत्मकथाएँ महत्वपूर्ण हैं।